



जनवरी 2013

सम्पादक

प्रदीप शर्मा

सह सम्पादक

डा. बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी

सुप्रिया गुप्ता

गणेश साहनी

कला अधिकारी

नीरू विजन

योगेश कुमार आनंद

कम्पोजिंग

मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन

अधिकारी

परवेज़ अली खान

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण

अधिकारी

लोकेश कुमार चोपड़ा

जनवरी 2013

विज्ञान
प्रगति

मूल्य

एक अंक : 20.00 रुपये
एक वर्ष : 200.00 रुपये
दो वर्ष : 380.00 रुपये
तीन वर्ष : 540.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65\$

शिकायत : 25841647

ई-मेल : lk@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769

प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284

विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301,
04-07/335, 295 फैक्स : 25847062

ई-मेल : vp@niscair.res.in

वेब साइट : http://www.niscair.res.in

शरीर-क्रियाविज्ञान : अब नई नोबल कमेटी

नोबल असेम्बली ने हाल ही में कैरोलिन्स्का संस्थान में शरीर-क्रियाविज्ञान या औषधि के लिए नोबल कमेटी के नए सदस्य मनोनीत किए हैं। इस प्रक्रिया में प्रोफेसर जुलीन आर. जीरथ को वर्ष 2013 के लिए कमेटी का चेयरमैन नियुक्त किया



गया है। प्रो. जुलीन जीरथ को प्रोफेसर अरबन लेन्डाहल की जगह चुना गया है जिन्होंने नोबल कमेटी के लिए लगातार छः वर्षों तक कार्य किया। प्रोफेसर थॉमस पर्लमान (आण्विक विकास बायोलॉजी) नोबल कमेटी के वाइस चेयरमैन होंगे। अन्य सदस्यों में प्रोफेसर जान एन्डरसन (संक्रामक रोग), रूने टॉफ्टगार्ड (पर्यावरणीय विषयविज्ञान) तथा अन्ना वेडेल (मेडिकल जेनेटिक्स) सम्मिलित हैं। इसके अलावा अनुसंधान क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए नोबल कमेटी में प्रत्येक वर्ष दस अस्थायी सदस्य भी चुने जाते हैं। प्रोफेसर गोरन के. हैन्सन मेडीकल नोबल संस्थान के निदेशक के साथ-साथ नोबल कमेटी तथा नोबल असेम्बली के सचिव के रूप में भी बने रहेंगे।

नोबल पुरस्कार विश्व में अपनी तरह का अति प्रतिष्ठित पुरस्कार है। पूरे विश्व से अनुसंधानकर्ताओं से प्रत्येक वर्ष फिज़ियोलॉजी या मेडिसिन में नोबल पुरस्कार के लिए सैकड़ों नामांकन प्राप्त होते हैं। नोबल कमेटी सभी आवेदनकर्ताओं के आवेदनों का आकलन तथा मूल्यांकन करती है और पुरस्कार के लिए नोबल असेम्बली के समक्ष प्रस्ताव रखती है। इस वर्ष नोबल असेम्बली 7 अक्टूबर, 2013 को फिज़ियोलॉजी या मेडिसिन के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार प्रदान करने के लिए निर्णय लेगी तथा हमेशा की तरह इसके तुरन्त बाद इसकी घोषणा कर दी जाएगी।



जुलीन आर. जीरथ

जुलीन आर. जीरथ का जन्म 1961 में मिलवाऊकी, विस्कॉंसिन, यूनाइटेड स्टेट्स में हुआ था तथा इनके पास स्वीडन व अमरीका दोनों की नागरिकता है। ये सन् 2001 से कैरोलिन्स्का संस्थान में क्लीनिकल इन्टीग्रेटिव फिज़ियोलॉजी की प्रोफेसर हैं। जीरथ का अनुसंधान कार्य उपापचय तथा मधुमेह पर केंद्रित है। इन्होंने शरीर-क्रियाविज्ञान तथा भेषजगुण विज्ञान के साथ-साथ आण्विक औषधि तथा सर्जरी विभाग में भी कार्य किया है। प्रोफेसर जुलीन आर. जीरथ ने स्टॉकहोम, स्वीडन के कैरोलिन्स्का संस्थान से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा बोस्टन के हार्वर्ड मेडीकल स्कूल से पोस्ट डॉक्टरल प्रशिक्षण प्राप्त किया और वर्तमान में स्टॉक होम, स्वीडन के कैरोलिन्स्का संस्थान में आण्विक औषधि एवं सर्जरी विभाग के इंटीग्रेटिव फिज़ियोलॉजी अनुभाग की प्रमुख हैं। इन्होंने 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए हैं जो टाइप 2 मधुमेह में इन्सुलिन प्रतिरोधकता के विकास में कोशिकीय कार्यविधि पर केन्द्रित हैं। मेहनत और लगन के साथ किये गये कार्य के परिणामस्वरूप प्रोफेसर जीरथ को मधुमेह के अध्ययन के लिए यूरोपियन सभा द्वारा मिन्कोव्सकी पुरस्कार, फेडरेशन ऑफ यूरोपियन बायोकेमिकल सोसायटी से जैवरसायन तथा आण्विक बायोलॉजी के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए दत्ता लेक्चरशिप पुरस्कार तथा कैरोलिन्स्का संस्थान से प्रतिष्ठित प्रोफेसर अवार्ड प्रदान किया गया। ये सन् 2006 में नोबल असेम्बली के लिए नियुक्त हुई थीं तथा वर्तमान में शरीर-क्रियाविज्ञान या औषधि की नोबल कमेटी की सदस्य तथा नोबल कमेटी की उपसभापति हैं।



अरबन लेन्डाहल

ये कीस्टोन सिम्पोजिया के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की अध्यक्ष, मधुमेह अध्ययन के लिए यूरोपियन सभा की एक्जीक्यूटिव कमेटी की सदस्य तथा अकेडेमिया यूरोपिया की सदस्य भी हैं। ये विभिन्न अग्रणी वैज्ञानिक जर्नलों की संपादक तथा डायबेटोलॉजी की एडीटर-इन-चीफ हैं। इनके अनुसंधान कार्य को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई है। जीरथ का समूह टाइप 2 मधुमेह रोगियों में इन्सुलिन प्रतिरोधकता की आण्विक क्रियाविधि के चित्रण के ट्रांसलेशनल अध्ययनों में अग्रणी है। इन्होंने डाइएसाइल ग्लिसरॉल काइनेसेस युक्त नए पाथवे की पहचान की है, जो मधुमेह में इन्सुलिन संवेदनशीलता को नियंत्रित करता है। इन्होंने कंकाल पेशी ग्लूकोज उपापचय तथा जीन अभिव्यक्ति को नियंत्रित करने के लिए व्यायाम मध्यवर्ती संकेतन सोपानी चित्रण किया है। यह क्लिनिकल रूप से सही पाया गया क्योंकि जो लोग व्यायाम करते हैं उनमें टाइप 2 मधुमेह के विकास से बचाव होता है।

वर्तमान कार्य व्यायाम के बाद स्वस्थ मनुष्य में टाइप 2 मधुमेह में अनुजात रूपांतरणों की भूमिका पर केन्द्रित है। अन्ततः इस कार्य का उद्देश्य इन्सुलिन प्रतिरोधकता के उपचार हेतु भेषजीय उपचार के लिए आण्विक कैंडीडेटों की पहचान कर पुष्टि करना है जिससे मधुमेह रोगियों के जीवन में सुधार हो सके।

... विज्ञान प्रगति के प्रिय पाठकों के लिए नव वर्ष 2013 मंगलमय हो ...

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान लेखकों के कथनों और मतों के लिये राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी एस आई आर), डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटारे जायेंगे।